(खून का रिश्ता)

-प्रश्नोत्तर-

प्रश्न-1. कहानी कला के तत्त्वों की दृष्टि से 'खून का रिश्ता' कहानी की समीक्षा कीजिए या विशेषताएँ बताइए।

अथवा-कथा-संगठन की दृष्टि से 'खून का रिश्ता' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा-'खून का रिश्ता' कहानी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा- 'खून का रिश्ता' कहानी के तथ्यों को प्रस्तुत कीजिए।

अथवा-'कहानी के तत्त्वों' के आधार पर 'खून का रिश्ता' कहानी का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 'खून का रिश्ता' भीष्म साहनी की वर्तमान समाज में टूटते रिश्तों की वास्तविकता एवं वातावरण प्रधान कहानी है। तत्वों की दृष्टि से खून का रिश्ता' कहानी की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) कथानक- अपनी सगाई मात्र सवा एक रुपया में ही सम्पन्न कराने हेतु बाबूजी के आधुनिक पुत्र वीरजी कटिबद्ध हैं माता-पिता समधी के द्वार पर अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार पूरी लाव-लश्कर के साथ जाना चाहते हैं। वीरजी के चाचा मंगलसेन विकलांग होते हुए भी इस अवसर पर पूर्ण सम्मान प्राप्त करने के लिए उतावले हैं, लेकिन उनकी भाभी, भाई और नौकर उनकी उपस्थिति को अपनी तौहीन समझते हैं।

सगाई में मंगलसेन को भेजने के लिए विवश भाभी ने उसके लिए अपनी पुत्री मनोरमा से धुला हुआ पाजामा और एक दिलाई। जूतों में पॉलिश भी की गई। मंगलसेन का इस प्रकार कायाकल्प किया गया। बाबूजी और मंगलसेन लड़की के पिता के जाकर सगाई की रस्म पूरी करके वापस आ गये।

समधी के घर से प्राप्त सामानों में चाँदी की तीन कटोरी और दो चम्मच देखकर वीरजी की माँ का पारा गरम हो गया। उन् हुआ कि एक चाँदी की चम्मच में मंगलसेन ने अवश्य हेराफेरी की है। फलतः बाबूजी ने उन्हें दण्डित करने की धमकी भी दी। दे से बीरजी का साला उसी समय आ पहुँचा और चाँदी की एक चम्मच मनोरमा को देकर तुरन्त वापस चला गया। मंगलसेन पर इस लगा आरोप निराधार सिद्ध हुआ। खून का

रिश्ता टूटते टूटते जुड़ा रह गया। इस प्रकार कहानी का कथानक विचारोत्तेजक प्रभावोत्पादक एवं जीवन के यथार्थ से जुड़ा है।

(2) शीर्षक- वर्तमान समाज में रिश्तों में आती दरार और उनके बिगड़ते बनते समीकरणों का कहानी के आरम्भ से अन्त तक विवेचन किया गया है। सम्पूर्ण कहानी खून के रिश्ते के आसपास घूमती है, अत: 'खून का रिश्ता' शीर्षक निश्चित रूप से अत्यन्त सार्थक और उपयुक्त है।

(3) पात्र और चरित्र चित्रण-कहानी 'खून का रिश्ता' में मानवीय सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धों का विवेचन किया गया है। विशेष रूप से सभी पात्रों के चरित्रों को संवारा गया है। कहानी मे मुख्य पात्रों मे वीरजी, मंगलसेन, बाबू जी, मनोरमा, माँ जी आदि है। बाकी गौण पात्रों मे समधी, मनोहर इत्यादि नजर आते हैं।

(4) कथोपकथन- कहानी के कथोपकथन पूर्ण नियन्त्रित चमत्कारयुक्त हैं। पुत्र वीरजी के दहेज विरोधी और माँ और पिता के क्षुब्ध वात्सल्यपूर्ण चरित्र का दो संवाद यहाँ द्रष्टव्य है-

"मैंने कह दिया, माँ, मेरी सगाई सवा रुपये में होगी और केवल बाबूजी सगाई डलवाने जायेंगे। जो मंजूर नहीं हो तो अभी से..."

इस प्रकार कथोपकथन और संवाद की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त सफल कहानी है।

(5) भाषा-शैली- किसी कहानी का प्राणतत्त्व भाषा-शैली होता है। 'खून का रिश्ता' कहानी को कहानीकार ने सरल एवं बोधगम्य भाषा के द्वारा प्रभावशाली बनाया है। चित्रात्मकता एवं प्रवाहमयता के साथ-साथ भाषा में अर्थ की उपयुक्तता का पूर्ण ध्यान रखा गया है।

(6) देश-काल और वातावरण- सभी परिस्थितियों की योजना कहानी में साभिप्राय और क्रमानुगत है। देश-काल और वातावरण का आँचलिक और स्थानीय रंग कहानी में उपस्थित है। देश-काल और वातावरण की दृष्टि से यह अत्यन्त सफल कहानी है।

(7) उद्देश्य - साहनी ने 'खून का रिश्ता' कहानी के माध्यम से दहेज (सामाजिक कोढ़ का) उन्मूलन करने का डिण्डिमघोष किया है। कहानी के शीर्षक की महत्ता के आधार पर मानवता, सामाजिकता तथा भाईचारे की भावना को सुदृढ़ बनाना ही कहानी का उद्देश्य है।

प्रश्न. अथवा 'खून का रिश्ता' कहानी के आधार पर वीरजी का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा-'खून का रिश्ता' के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा-'खून का रिश्ता' कहानी के मुख्य पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा-'खून का रिश्ता' कहानी के मुख्य पात्र के चरित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

वीरजी का चरित्र-चित्रण

'खून का रिश्ता' 'भीष्म साहनी की कहानी के मुख्य पात्रों में वीरजी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(1) सच्चा प्रेमी- आधुनिक युवा वीरजी अवश्य है, किन्तु प्रेम के नाम पर उसमें आज के युवकों जैसी उच्छृंखलता बिल्कुल नहीं है। पति-पत्नी के पवित्र सम्बन्धों और उसकी कोमल भावनाओं को वह न केवल समझता है, वरन् उनको अहमियत भी देता है।

(2) दृढ़ निश्चयी - वीरजी निश्चय कर चुका है कि उसकी सगाई में न दान-दहेज लिया जायगा और न गाजे-बाजे का कोई आडम्बर होगा। केवल एक व्यक्ति ही सगाई के लिए जायेगा। इसीलिए वह सभी प्रकार के पारिवारिक और सामाजिक दबावों को दरकिनार करते हुए अपने निश्चय पर दृढ़ रहता है।

(3)आधुनिक युवा- वर्तमान प्रगतिवादी युग का वीरजी आधुनिक युवा है। पुरानी परम्पराओं और रूढ़ियों में वह विश्वास नहीं करता। नई सोच के द्वारा वह समाज में परिवर्तन लाना चाहता है।

(4) जैसी कथनी-वैसी करनी-रंचमात्र भी वीरजी की कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। वह जो कहता है, वही करता है। चाहता है कि वे जो कहें. उसी के अनुसार आचरण भी करें। अपने पिता को उनके सिद्धान्तों का स्मरण कराता हुआ वह उनको उन पर- "सगाई का वक्त आया तो सिद्धान्त ताक पर रख दिये। बस, आप अकेले जाइये और सवा रूपया लेकर सगाई डलवा लाइये।

(5) खून के रिश्तों का हिमायती- खून के रिश्तों की अहमियत समझनेवाला वीरजी मानवतावादी युवक है। वह घर-परिवार में सब प्रकार से उपेक्षित चाचा मंगलसेन को सगाई में अपने पिता के साथ भेजने का निर्णय लेता है।

इस प्रकार वीर जी एक उत्कृष्ट पात्र के रूप मे उभरकर सामने आते हैं।

****